बेल के पौधे और लाइम तितली की इल्लियाँ

युवान एविस

मैं एक आवासीय स्कूल में 16 बच्चों का 'हाउस मास्टर' था और मुझे हफ्ते में 20 घण्टे पढ़ाना भी पड़ता था। इन दोनों के अलावा मैं बचे वक्त में पत्राचार पाठ्यक्रम (कॉरेस्पोंडेंस) से अपनी स्कूल की पढ़ाई भी पूरी कर रहा था। और तो और, बहुत सारी स्टाफ मीटिंग्स में बैठना पड़ता था और गैरहाज़िर शिक्षकों की कक्षाएँ भी लेनी पड़ती थीं। इन हालात में, इल्लियों की जीवनशैली पर मुझे बड़ी जलन होने लगी। दिनभर इनका मुख्य काम खाना ही होता है, और फिर, ज़रा और भी खाना। खाने-खाने के बीच में ये पत्तियों की ठण्डी छाया में लम्बा आराम भी फरमाती हैं। इस पेटूपन के नतीजतन, अपनी ज़िन्दगी में इल्ली बार-बार अपनी खुद की खाल से बड़ी हो जाती है, लिहाज़ा उसे इस खाल को अक्सर छोड़ना पड़ता है। अलबत्ता, ये फौरन ही इस छोड़ी हुई चमड़ी को भी खा जाती हैं।

अपना पेशा या करियर तय करने से पहले ही, ज़िन्दगी ने मुझे स्कूल में पढ़ाने पर मजबूर कर दिया था। मेरे पास तो कोई डिग्री भी नहीं थी। इससे मेरे अन्दर कुछ कमियों का एहसास गहरा रहा था, खास तौर से मेरे विशिष्ट सहकर्मी शिक्षकों की सोहबत में। सिर्फ इल्ली, तितली, चिड़िया, साँप और आसपास के बाकी जंगली जानवरों के साथ वक्त बिताते हुए ही मेरी उदासी छँटती थी और हावी होते ज़हरीले विचार दूर हो जाते थे, और मैं आगे बढ़ पाता था। लेकिन अक्सर बाकी शिक्षकों के साथ बातचीत में कोई-न-कोई जानवर की प्रजाति का हवाला आ जाता, और मेरे द्वारा उनके कठिन वैज्ञानिक नाम बताने पर इन दिग्गज बुद्धिजीविओं से मुझे इज़्ज़त मिल जाती थी।

दुश्मनों से बचाव की रणनीतियाँ

अब लाइम तितली पर वापिस आते हैं। वह सिर्फ एक और चीज़ पर मशक्कत करती है और वो है मल त्यागना। लेकिन गौर करने की बात है कि मल त्यागने का फर्ज़ मुकम्मल करते ही, वो इल्ली फौरन उस जगह से कूच कर लेती है। कभी-कभार अलग पत्तियों पर भी चली जाती है। ज़ाहिर है, आप नहीं चाहते कि अपने ही छोड़े सुरागों से दुश्मन को आपकी खबर लग जाए। अपनी बीट से दूरी बरतना या उसको छुपा देना, काफी सारे कीड़े और उनकी इल्लियाँ ही नहीं बल्कि वो सारे जानवर भी करते

हैं जो दूसरे जानवरों के 'मेन्यू कार्ड' पर पाए जाते हैं। 'मोरिंगा वेब्बर' और 'औल स्किपर' की इल्लियाँ अपनी बीट को पत्तियों के बीच में सिलकर छुपा देती हैं। और 'जीयोमेट्रिड पतंगे' की इल्लियाँ अपने पिछवाड़े ऐसी दिशा में करते हैं कि पौधे की बजाय उनकी टट्टी सीधे ज़मीन पर गिर जाए। और आप कभी गौर फरमाइएगा कि पंख-नुमा कण्ठ वाली छिपकली कैसे बीट का काम करते ही उस जगह से भाग लेती है। लेकिन सबसे कमाल की हरकत तो झींगुर ही करता है। जैसे ही वो फारिग हो जाता है, फौरन गिरती लेंडी को अपनी एड़ी से एक ज़ोरदार लात मारता है, ताकि वो कई गज़ दूर जाकर गिरे।

अपनी चमड़ी चौथी या पाँचवीं बार बदलने के बाद लाइम इल्ली में काफी बड़ा रूपान्तरण होता है, हालाँकि ये सिर्फ उसके भेस में होता है, बर्ताव में नहीं। पहले के टट्टी-जैसे पोशाक से अब निकलती है, एक बड़ी तोते-जैसी हरे रंग की इल्ली। यह बदलाव एक तिलस्माती चीज़ लगती है, जैसे कोई मेंढक एक राजकुमार बन जाए। शुरू में ऐसा लगता है कि इसकी मुण्डी पर निशानात साँप जैसे हैं। इससे ज़्यादा हैरत-अंगेज़ और सर्प-नुमा तो 'बाज़ पतंगे' की इल्ली होती है जिसकी कमज़ोर नकल लाइम इल्ली करती है (अगर करती भी है, तो)। अक्सर यह खयाल आता है कि अपने जीवन-चक्र के इस ही मकाम पर लाइम इल्ली अपनी काया इतनी क्यों पलट लेती है। गालिबन टट्टी की नकल करने के लिए वो बहुत बड़ी हो गई है, क्यूँकि किसी भी जानवर की लेंडी इतनी बड़ी नहीं होती। चुनांचे, अब वो छुपने के लिए छलावरण की पुरानी तकनीक पर लौट आती है।

अलबत्ता, खतरे से बचने के लिए लाइम इल्ली एक और खासा तरीका अपनाती है (उनकी नस्ल – स्वालोटेल – की अन्य तितलियाँ भी यह तरीका अपनाती हैं)। यह प्राणी शरीर को पीछे की ओर सिकोड़कर अपनी



चित्र-1: *खतरे से बचने के लिए लाइम इल्ली शरीर को पीछे की ओर सिकोड़कर, अपनी मुण्डी पर से एक खूनी लाल रंग की सींग-नुमा रचना निकालती है। साँप की जीभ की तरह इसके दो शाख होते हैं जिससे हमलावार कुछ लम्हों के लिए दंग हो जाता है। इस बीच इल्ली भाग जाती है। और इसी वक्त वह एक अजीब-सी गन्ध भी निकालती है जिससे सूँघनेवाले को मितली-सी आने लगती है।*

मुण्डी पर से अचानक एक खूनी लाल रंग की सींग-नुमा चीज़ निकालती है। साँप की जीभ की तरह इसके दो शाख होते हैं और यह हमलावर को कुछ लम्हे दंग छोड़ देती है। इस बीच इल्ली भाग जाती है। और इसी वक्त मालूम होता है कि इल्ली ने कोई अजीब-सी बू भी निकाली है। यह बू शुरू में मीठी लगती है लेकिन कुछ देर बाद सूँघनेवाले को मितली-सी आने लगती है।

इस रवैय्ये को समझने के बाद, मैं लाइम इल्ली के इस बर्ताव से अपने शिष्यों और बाकी शिक्षकों के दिल बहलाने लगा। अलबत्ता, इल्ली की पेश-ए-बू हर एक को नहीं भायी। मुझे यह जानने की जिज्ञासा थी कि इस इल्ली के असल हमलावरों पर यह घिनौनी बू क्या असर करती है। पहले मुझे लगा कि मैं छुपकर इल्ली का शिकार करती किसी चिड़िया का इन्तज़ार करूँ लेकिन मैंने जल्द ही ये खयाल त्याग दिया। इसकी बजाय मैंने एक परेशान इल्ली को अपने वफादार कुत्ते 'डॉन' की नाक के नीचे पकड़ा, उसका असर देखने। शुरू में डॉन को कोई फर्क नहीं पड़ा, लेकिन जैसे ही उसके नथुनों में बू पहुँची, वो फौरन पीछे हटा और बार-बार छींक मारने लगा। बस, इसके अलावा और कुछ नहीं। शायद किसी बुलबुल जैसी छोटी प्राणी पर इस बू के असरात और शदीद होंगे। लेकिन कुछ दिन बाद जब हम बेल के पौधों के सामने से गुज़रे, मुझे ऐसा लगा कि डॉन मुझे शक्की नज़रों से ताक रहा था।

लाइम तितलियों का जीवन-चक्र

इसी दौरान मैं माध्यमिक शाला के बच्चों को उनका सबक 'तितली का जीवन-चक्र' सिखाता हूँ। स्कूल के जड़ीबूटियों वाले बगीचे में, लाइम और अन्य तितलियाँ और पतंगों के अण्डे से लेकर उनके जीवन-चक्र के सारे मुकाम पाए जाते हैं। बच्चों को कुछ खास पौधों के पत्तों के नीचे अण्डे, लार्वा (इल्ली) और प्यूपा (कोशित) ढूँढने पड़ते हैं। फिर वो एक हफ्ते के लिए उनपर अपनी नज़र रखते हैं और उनमें बदलाव दर्ज करते हैं। वो एक-एक तितली का तफसील में वर्णन करते हैं ताकि उनको कक्षा में 'फील्ड गाइड' की मदद से पहचान सकें। बच्चों के लिए यह एक बड़ी दिलकश गतिविधि होती है और हर बार उन्हें नई चीज़ें पता चलती हैं। इस वक्त क्लास में शोरगुल और अफरा-तफरी भी हो जाती है, लेकिन बच्चों के साथ तो यह होना ही होता है। क्लास की आखिर में बच्चे अक्सर लाइम इल्ली को तंग करके, उसके लाल सींगों वाले करतब देखते हैं। ये हमेशा उनको जोश से भर देते हैं।

जब एक बड़ी-सी इल्ली अपनी आँतों को बड़े धूम-धाम से खाली करती है, मालूम होता है कि उसका



चित्र-2: *लाइम तितली का रूपान्तरण जिसमें उसकी इल्ली, प्यूपा और वयस्क रूप दिख रहा है।*

रूप-ए-तितली अपनाने वाला वक्त आ ही गया है। पहले तो वो अपना पिछवाड़ा पौधे पर कस लेती है और उससे टेढ़ी लटक जाती है। दो रेशमी धागों से वो अपना धड़ भी उस डण्डी पर बाँध लेती है। मालूम होता है कि पौधे की डण्डी से कोई छज्जा निकला हुआ हो। पौधों के अलावा, मुझे लाइम तितली के प्यूपा और भी असम्भव जगहों पर मिले हैं, मसलन ईंट के ढेर, बिजली के पोल, और लोहे की जाली वाली दीवार, लेकिन मोटे तौर पर कह सकते हैं कि वो हमेशा अपने मेज़बान पौधे के नज़दीक प्यूपेट करते हैं। एक दिन के अन्दर उनका हरा रंग मुरझाने लगता है और यह प्यूपा एक समुद्री शंख जैसा दिखने लगता है। अलबत्ता, यह ज़रूरी नहीं कि जब कोई इल्ली ऐसा करे तो वो प्यूपेट ही करेगी। अक्सर मैंने इन इल्लियों के बदलते रूपों को दस्तावेज़ करने के लिए, इनका पीछा किया है। मगर जल्द ही पता चला कि इल्ली दोबारा मटरगश्ती कर रही है या उसने एक और पत्ता हज़म कर



चित्र-3: *लाइम तितली की इल्ली में जब वयस्क बनने की प्रक्रिया शुरू होती है तो पहले वो अपना पिछवाड़ा पौधे पर कस लेती है और उससे टेढ़ी लटक जाती है। फिर दो रेशमी धागों से वो अपना धड़ भी उस डण्डी पर बाँध लेती है। इसके बाद वह प्यूपा में तब्दील हो जाती है।*

लिया है। मैंने यह भी जाना कि ये इल्लियाँ दोपहर की गर्मी में झपकी लेना पसन्द करती हैं।

कुछ ही महीनों में, लाइम इल्लियों के कई घराने प्यूपेट करके तितली बन गए होंगे, और उन तितलियों ने दोबारा साथी ढूँढकर अण्डे भी दे दिए होंगे। गालिबन नवम्बर के आखिर तक मैंने बेल के पौधों पर लाइम तितलियों की कम-से-कम पाँच पीढ़ियाँ देखी होंगी। एक वक्त तो ऐसा भी आता है जब लाइम तितलियों की तादाद बाकी सारी तितलियों से बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है। जहाँ देखो, इन्हीं की हिचकिचाती, अठखेलियाँ मारती परवाज़ दिखती है। लेकिन जब पूर्वोत्तर मानसून की पहली बौछारें पड़ने लगती हैं और दिसम्बर में एक-आध तूफानी बवण्डर आता है, तो इन तितलियों का पलना-पनपना थम जाता है। और बेल के पौधों की सुकून-भरी आहें तकरीबन सुनाई देती हैं। अब मुमकिन है कि लाइम तितलियाँ पलायन कर गई हों, चूँकि उनकी संख्या घट गई है। इस मुश्किल मौसम में बाकी तितलियाँ छुप-छुप कर रहती हैं, ज़्यादा दिखती नहीं। मैं यह भी देख रहा हूँ कि बीते सालों में बेल के पौधे बहुत अच्छे से उगने लगे हैं। अब मैं उनके तने को अपनी अँगुलियों से मुश्किल से ही घेर पाता हूँ। जब गर्मी का मौसम आएगा तो वो अपनी टहनियों से बहुतेरी ताज़ी तिगुन पत्तियाँ निकालेंगे और नई शाखों पर भयंकर काँटे-ही-काँटे उग आएँगे। मैं सोचता हूँ कि शायद पिछले महीनों में सही गई ज़्यादतियाँ, इन बेल के पेड़ों को सालभर फलने-फूलने के लिए बेहतर तैयार कर देती हैं।

युवान एविस: हिन्दुस्तान के लेखक, प्रकृतिवादी, शिक्षक और एक्टिविस्ट। वर्तमान में, अबेकस मॉण्टेसरी स्कूल में 'फार्म, पर्यावरण और समाज' कार्यक्रम का समन्वय करते हैं। उन्होंने दो किताबें और कई लेख लिखे हैं। शायद सैंक्चुअरी के अब तक के सबसे कम उम्र के ग्रीन टीचर पुरस्कार प्राप्तकर्ता, युवान सबसे बेहतरीन, सबसे करिश्माई प्रकृति के शिक्षाविदों में से एक हैं। *बेल के पौधे और लाइम तितली की इल्लियाँ* लेख के लिए युवान को 2017 में मद्रास नेचुरलिस्ट्स सोसाइटी से एम. कृष्णन नेचर राइटिंग अवार्ड मिला था। युवान का काम उनके इंस्टाग्राम खाते a_naturalists_column पर देखा जा सकता है।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: फज़ल रशीद: ज़्यादातर बागबानी और पेड़-पौधों से जुड़े कामों में मसरूफ रहते हैं। भोपाल में निवास। सम्पर्क - fazalrashid@gmail.com

यह लेख *कथादेश* पत्रिका के अंक - जनवरी 2025 से साभार।

इस लेख का मूल अँग्रेज़ी नोशन प्रेस द्वारा प्रकाशित युवान एविस की किताब *A Naturalist's Journal* में प्रकाशित हुआ है।